

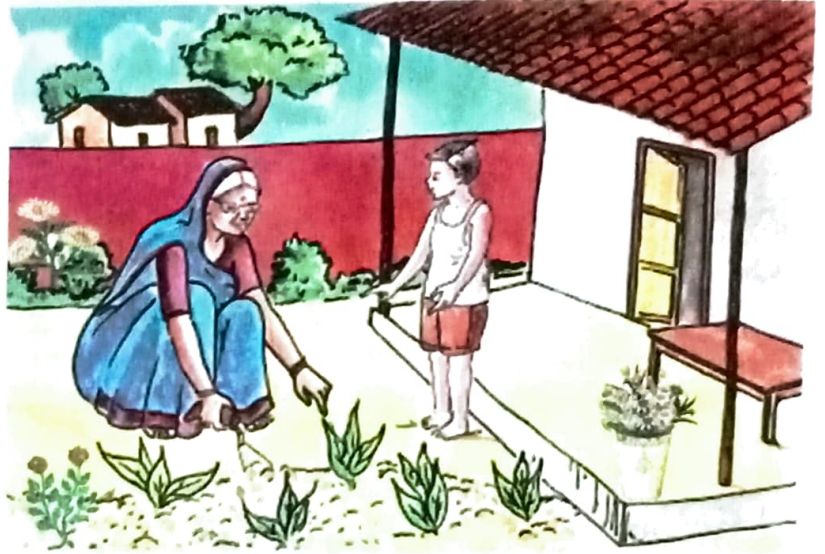


7RN129

9

दादी माँ की बगिया

गर्मी की छुट्टियों में विशाल अपने दादा-दादी के घर रामनगर गया था। सुबह के पाँच बजे थे। विशाल की आँखें खुली तो उसने देखा कि उसकी दादी माँ कमरे में नहीं थीं। इतनी सुबह-सुबह दादी माँ कहाँ चली गईं ? यह सोचकर, आँख मलता हुआ वह बाहर आया तो दादी माँ को घर की बगिया में पाया।



विशाल : दादी माँ! इतनी सुबह-सुबह आप यहाँ क्या कर रही हैं ?

दादी : गुड़ाई कर रही हूँ, बेटा!

विशाल : गुड़ाई किसे कहते हैं ?

दादी : गमलों व क्यारियों की मिट्टी को हवा और पानी अच्छी तरह मिलता रहे इसके लिए मिट्टी को खुरपी से खोदकर भुरभुरा किया जाता है। इसे ही गुड़ाई करना कहते हैं। पेड़-पौधों को स्वस्थ रखने के लिए इनकी नियमित देखभाल जरूरी है।

विशाल : दादी, पेड़-पौधों की देखभाल के लिए आप और क्या करती हैं ?

दादी : जैसे हमें जीवित रहने के लिए भोजन और पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार पेड़-पौधों को भी जीवित रहने के लिए पानी, हवा, धूप और पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

विशाल : पौधों में पानी किस समय डालना चाहिए ? क्या मैं स्कूल से आने के बाद पौधों में पानी डाल सकता हूँ ?

दादी : पौधों को सुबह तथा सायंकाल पानी से सींचना चाहिए। तेज धूप में पौधों में पानी

कभी नहीं डालना चाहिए। तेज धूप में पानी डालने से पौधों को नुकसान पहुँचता है।



विशाल : दादी, अब अन्दर चलिए, मुझे मंजन करके पानी पीना है।

दादी : ठीक है बेटा, बाकी काम हम लोग कल करेंगे।

विशाल : कल हम लोग क्या करेंगे ?

दादी : कल हम लोग अपने बगीचे की निराई करेंगे।

विशाल : निराई कैसे की जाती है ?

दादी : घास, सूखे पत्ते, फूल और जंगली पौधों को गमलों और क्यारियों से खुरपी द्वारा हटाया जाता है।

विशाल : निराई से क्या लाभ होता है ?



दादी : बेटा, इससे हमारे रोपे गए पौधों को अधिक खाद, पानी व धूप मिलती है जिससे वे तेजी से बढ़ते हैं।

विशाल : ये 'खाद' क्या है ? दादी !

दादी : मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए उसमें खाद मिलाई जाती है। खाद, जानवरों के गोबर, नीम व सरसों की खली से बनाई जाती हैं। इसके अलावा रसोईघर के कचरे जैसे फलों व सब्जियों के छिलके, अण्डे का खोल, बचा हुआ खराब भोजन, चाय की पत्ती आदि को गलाकर भी खाद तैयार की जाती है। इस तरह के कचरों से बनी खाद को जैविक खाद कहते हैं। ऐसी खाद बनाने के लिए इन कचरों को एक गड्ढे में डालकर मिट्टी से ढक दिया जाता है। कुछ महीनों में यह कचरा गल कर मिट्टी में मिल जाता है और खाद की तरह कार्य करता है। हम बाजार से भी अन्य खाद जैसे यूरिया, अमोनियम सल्फेट, डाई अमोनियम फास्फेट भी खरीद सकते हैं। ये खाद रासायनिक पदार्थों से बनी होती है। ऐसी खाद को रासायनिक खाद कहते हैं। इनका निर्माण बड़े-बड़े कारखानों में होता है।

इसे भी जानें— अनुपयोगी जैविक पदार्थों के विगलित (गलने) और खाद में परिवर्तन होने की प्रक्रिया को कम्पोस्टिंग कहते हैं।

चित्रों को देखें और बताएँ कि पौधों की देखभाल में ये उपकरण किस प्रकार सहायक हैं। इनके अन्य कार्य क्या हैं ?



विशाल : दादी, क्या मैं गुलाब के पौधे वाले गमलों को घर के अन्दर कमरे में सजा सकता हूँ ?

दादी : नहीं बेटा, ऐसा करने से पौधों को उचित हवा और धूप नहीं मिल पाएगी। पौधे, सूर्य के प्रकाश में हवा से कार्बनडाईऑक्साइड गैस लेकर अपना भोजन बनाते हैं। इसलिए पौधों के बढ़ने के लिए धूप और हवा अत्यन्त आवश्यक है। साथ ही साथ अत्यधिक तेज धूप और ठंड (कोहरे, पाले) से भी पौधों को बचाना आवश्यक है।

विशाल : दादी, क्या इसी प्रकार सभी पौधों की देखभाल करनी पड़ती है ?

दादी : हाँ बेटा, जब पौधे छोटे होते हैं तो उनकी अधिक देखभाल करनी पड़ती है। जब नीम, पीपल, अशोक, आम, महुआ, बरगद, कटहल आदि के पौधे बड़े हो जाते हैं तो उनकी कम देखभाल भी करें तो भी वे बढ़ते रहते हैं।

विशाल : दादी, जंगल में, खेतों के किनारे या सड़कों के किनारे जो पेड़-पौधे पाए जाते हैं उनकी देखभाल कौन करता है ?

दादी : जंगल या खेतों के किनारे पाए जाने वाले पेड़-पौधे स्वतः उग जाते हैं और प्राकृतिक वातावरण में बढ़ते रहते हैं जैसे-बबूल, कीकर, चिरचिटा, दूब घास, मदार आदि। इनकी देखभाल प्रकृति स्वयं करती है। ये अपनी आवश्यकतानुसार प्रकृति से पानी, हवा, धूप व पोषक तत्त्व लेते रहते हैं। इसीलिए हमें प्रकृति को शुद्ध रखना चाहिए नहीं तो ये पेड़-पौधे सूख जाएँगे और उनसे मिलने वाली उपयोगी वस्तुएँ हमें नहीं मिलेंगी।

विशाल : दादी, पेड़-पौधों से हमें क्या मिलता है ?

दादी : पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं। ये हमारे एवं अन्य जीवधारियों के लिए भोजन का मुख्य स्रोत हैं। हमें इनसे बहुत सारी अन्य उपयोगी वस्तुएँ भी प्राप्त होती हैं। फल, रेशे, दाल, सब्जी, मसाले, अनाज व औषधि सभी पेड़-पौधों से मिलते हैं। पेड़ों से हमें लकड़ियाँ भी मिलती हैं जिनका उपयोग फर्नीचर से लेकर घर बनाने तक में होता है। पेड़-पौधे हमें छाया तथा साँस लेने के लिए शुद्ध हवा देते हैं। इन्हीं पेड़-पौधों से हमें मौसमी फूल भी मिलते हैं।

विशाल : दादी, मौसमी फूल किसे कहते हैं ?

दादी : बेटा, अलग-अलग मौसम में अलग-अलग प्रकार के फूल खिलते हैं इन्हें मौसमी फूल कहते हैं जैसे-गेंदा, गुलाब, गुड़हल, चमेली, बेला, सूरजमुखी आदि।



पता कीजिए— विभिन्न मौसम में खिलने वाले फूलों के विषय में प्राप्त जानकारी को दी गई तालिका में भरिए—

फूल का नाम	किस मौसम में खिलता है	रंग	महक है / नहीं

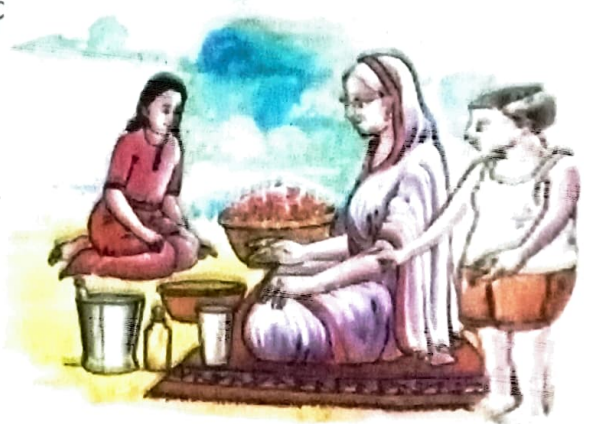
विशाल : दादी, इन फूलों का उपयोग कहाँ-कहाँ करते हैं ?

दादी : बेटा, तुमने देखा होगा कि फूलों का प्रयोग शादी, उत्सवों तथा अन्य अवसरों पर सजावट के लिए करते हैं। फूलों से माला बनाई जाती है। फूलों से एक और भी चीज बनती है वह है— इत्र। तुमने इत्र की शीशी तो देखी होगी। एक छोटी सी इत्र की शीशी बहुत सारे फूलों से बनती है। उत्तर प्रदेश का कन्नौज जिला इत्र के लिए मशहूर है। यहाँ पर पास के इलाकों से ट्रकों में भरकर रात-रानी, चमेली, गुलाब, मोंगरा आदि के फूल लाए जाते हैं।



विशाल : दादी, इतने सारे फूल कहाँ से मिलते हैं?

दादी : बेटा, जैसे हम लोग अपनी छोटी सी बगिया में कई तरह के फूलों के पौधे लगाते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग फूलों की खेती करते हैं और इसे बेचते हैं। इन्हीं फूलों से माला, गुलाबजल, इत्र व केवड़ा आदि बनता है।



विशाल : दादी, गुलाब जल का प्रयोग कहाँ करते हैं ?

दादी : बेटा, गुलाबजल और ग्लिसरीन बराबर मात्रा में मिलाकर उसमें नीबू की कुछ बूंदें डालकर शीशी में भरकर रख लेते हैं। इसके इस्तेमाल से सर्दी में त्वचा नहीं फटती है।

विशाल : दादी, मेरी तकिया व चादर पर भी फूलों के चित्र बने हैं।

दादी : हाँ बेटा! फूलों की डिजाइन बर्तनों, घरों की फर्श व कपड़ों आदि पर बनी होती है। विभिन्न त्योहारों में लोग रंगोली बनाते हैं। इसमें भी फूलों की डिजाइन बनाई जाती है।



विशाल : दादी माँ, पेड़-पौधे तो हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं।

दादी : हाँ बेटा, बिना पेड़-पौधों के हमारा जीवन संभव नहीं है। जीवन के लिए इनकी उपयोगिता को देखते हुए हमारा दायित्व है कि हम अपने आस-पास पाए जाने वाले पेड़-पौधों की समुचित देखभाल करें।

विशाल : हाँ दादी, आप बिल्कुल ठीक कहती हैं। अब से मैं भी पौधों की देखभाल में आपकी सहायता करूँगा। प्रतिदिन सायंकाल पढ़ाई करने के बाद पौधों में पानी डालूँगा। नए पौधे भी लगाऊँगा। अपने दोस्तों से तथा अन्य लोगों से पेड़-पौधों की देखभाल के लिए कहूँगा।

इसे भी जानें—

- | | |
|---------------|--|
| रंग बनाने में | — पलाश, गुलदावरी, जीनिया आदि फूलों से रंग भी बनाए जाते हैं। |
| दवाई में | — गुड़हल, गुलाब, कमल, मोगरा व गेंदा आदि फूलों का प्रयोग दवाई बनाने में किया जाता है। |
| खाने में | — केला, गोभी व महुआ आदि के फूल खाए भी जाते हैं। |



1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

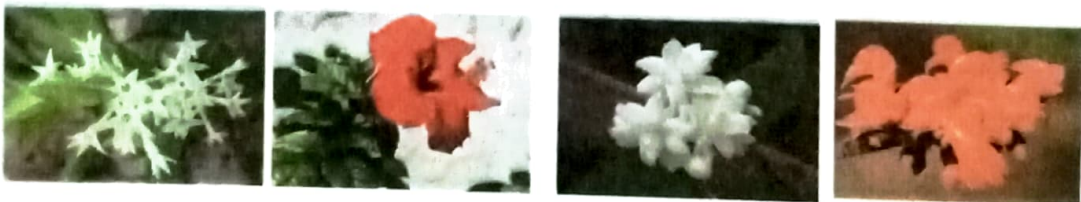
- (क) निराई से क्या लाभ होता है ?
- (ख) कम्पोस्टिंग किसे कहते हैं ?
- (ग) फूलों के कोई चार उपयोग लिखिए ?
- (घ) लाल, पीले एवं सफेद रंग के फूलों की सूची बनाइए ?

2. दिए गए शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरिए –

(खुरपी, खाद, ग्लिसरीन, कन्नौज)

- (क) मिट्टी कोसे खोदकर भुरभुरा किया जाता है।
- (ख) गुलाबजल में नींबू और मिलाते हैं।
- (ग) मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए उसमें मिलाई जाती है।
- (घ) उत्तर प्रदेश के जिले में इत्र बनता है।

3. नीचे दिए गए फूलों को पहचानिए और इनके नाम, रंग, उपयोग व किस मौसम में खिलते हैं, इन्हें लिखें।



प्रोजेक्ट वर्क

- (क) कम्पोस्टिंग विधि से घर पर जैविक खाद तैयार करें।
- (ख) गिरे फूल को इकट्ठा करके इसे अपनी कॉपी या अखबार के नीचे दबाकर रख दीजिए। सूखने पर इसे किसी कॉपी में चिपका कर इसके नीचे इसका नाम लिख दीजिए। बन गया फूलों का सुन्दर एलबम (हरबेरियम)।